रात्रि क्लास 6-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

सभी बच्चों को फूल ही कहना पड़े। इस संगम युग पर फूल ही कहा जाता है। गार्डन है उस में वैराईटी है फूलों की। कांटों की भी वैराईटी होती है। फूल कैसे बनते हैं। पवित्र को ही फूल कहा जाता है। अभी फूलों में चाहिए खुशबुएं। यह चैतन्य फूल है। इन में खुशबूएं हैं जब कि याद की यात्रा में हैं। और ज्ञान है इतना ही फूल भासेंगा। ज्ञान की खुशबूएं आवेंगी। आत्मा को ही देखा जाता है। कांटे से फूल बन रहे हैं। फिर कांटा बनेंगे अभी याद है। फूल बन जावेंगे फिर कुछ भी याद न पड़ेगा। सिवाय एक बाप के और कोई फूल बना न सके। इसमें वास्तव में कोई संशय न आना चाहिए। परन्तु माया इतनी प्रबल है जो कांटा बना देती है। मनसा भी तूफान आते हैं। कच्चे बच्चे हैं तो झट झट कांटा बना देती है। तो क्या करना चाहिए। कांटेपने का बदबूं न आवे इसके लिए क्या उपाय है? उपाय एक ही है। बाप तो स्वयं फूल है। वह कांटा नहीं बनता। यह जो दादा है, यह रथ है। दादा फिर सम्बन्ध हो जाता। रथ है। यह भी बड़ा भारी कांटा था। यह भी अभी फूल बन रहा है। तो अभी तुमको फूल कहेंगे। तुम पुरुषोत्तम संगम युग पर हो। पूछते हैं बाबा क्या पुरुषार्थ करें? बच्चे याद में ही रोला है। अच्छी रीत याद नहीं करते हो। अपने को आत्मा नहीं समझते हो। आत्मा ही सभी कुछ करती है। बाप पराये शरीर में, रावण राज्य में आया है। उनका अपना शरीर होता ही नहीं। उनका नाम सदैव शिव ही है। इनका अपना नाम है। उनको पिराते हैं। बाकी मेरा नाम शिव ही शिव है। बदलता नहीं। बाकी है मनुष्य मात्र। सूक्ष्मवतन का तो समझाया था ध्यान में बाबा मम्मा देखते हैं। वह भी यही है। सम्पूर्ण का ल० ही होता है इसको ऐसा बनना है। तुमको भी ऐसा बनना है। सूक्ष्मवतन में क्या बाबा का रूप देखती हो। वैकुण्ठ में ल०ना० देखेंगे। ऐसा पवित्र बनना है जैसा सूक्ष्मवतन में देखते हो। तुमको भी ऐसा बनना है। इ में बहुत पुरुषार्थ करना है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही खुशी का पारा चढ़ेगा। जितना2 तुम तमोप्रधान तमो रजो सतो याद की यात्रा से बनेंगे। कल्प2 तुम ऐसे बनते हो। याद दिलाते हैं कल्प पहले भी हमने कहा था अपने को आत्मा समझ देह के सर्व सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। अभी भी कहता हूं कल्प2 भी कहता आऊंगा। अभी पुरुषार्थ करना है ऊंच पद पाने लिए। अच्छी बात के लिए हमेशा मनुष्य पुरुषार्थ करते हैं। जितना याद करते हैं पढ़ाई पढ़ते हैं। पढ़ाई तो बहुत ही सहज है। अपने 84 जन्मों को जानना है। चक्र को जानना और बाप को याद करना। स्कूल में पढ़ाने वाला भी याद, सब्जेक्ट भी याद है। याद किया और पढ़ाई पढ़ी बस। और कुछ याद करना न है। यह बातें कोई डिफीकल्ट तो नहीं हैं। बाप बहुत ही सहज समझाते हैं। समझते हो हम सतोप्रधान से गिरे जरूर हैं। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। पुरुषोत्तम बनने का। सो भी पुरुषोत्तम उत्तम ते उत्तम पुरुष हैं। ल०ना० वा राधे कृष्ण कहो। सीता-राम को पुरुषोत्तम नहीं कहेंगे। वह तो 25% कम हो जाते हैं। तुम जरूर पुरुषार्थ करेंगे। हम तो स्वर्ग में जावेंगे। सभी स्वर्ग में नहीं। जावें तो स्वर्ग में। बाबा के बच्चे हैं तो नई दुनिया में आवें। सतयुग में सुख बहुत है। इसलिए बाप कहते हैं मेहनत करो। यह है वही पुरुषोत्तम संगम युग। गीता है ही आदी-सनातन-देवी-देवता-धर्म की। गीता में ही यह अक्षर है। मन्मनाभव ... और कोई कब ऐसे अक्षर कहेंगे नहीं। शास्त्र देख पढ़कर सुनावेंगे। कृष्णभगवानुवाच मामेकं याद करो। मुझे अपने बाप को याद करो। कृष्ण को बाप थोड़े ही कहेंगे। भक्ति मार्ग चलता भी थोड़ा समय है। परन्तु उनका प्रभाव कितना है। यहां समझते भी हैं परन्तु माया बड़ी दुस्तर है। यहां से गया विकार में गिरा तो खत्म। पतित बन गया। फिर बहुत टाईम लग जाता है। कमाई भी बड़ी भारी है। यहां हाफपार्टनर तो कोई होते नहीं। ठगी लगी पड़ी है। यह बाप तो कहते हैं हरेक बच्चों को अपने लिए पूरा पुरुषार्थ करना है। मार्क्स अनुसार ही पास होंगे। फिर पास हो न सकेंगे। कल्प2 नापास होते रहेंगे। फिर फुल पास हो स्वर्ग में जाने का उपाय ही नहीं। बाप कितना प्यार से समझाते हैं। अपना जीवन देवता जैसा बनाना है। बल्कि देवता बनना है। इन कृष्ण जैसा बनना है। इसका नाम ही है गीता-पाठशाला। यही एक शास्त्र है जिसके नाम पर गीतापाठशाला कहा जाता है। इस्लामी,

बोधी, आद पढ़ते थोड़े ही है जो पाठशाला कहा जाये। एमआबजेक्ट ही नहीं। यहां तो एमआबजेक्ट है। क्राईस्ट नहींकहेंगे मैं बाप भी हूं, शिक्षक भी हूं, गुरु भी हूं। शिक्षा किसी को देंगे। अभी संगम युग पर सभी को शिक्षा मिलनी है। हिसाब-किताब सभी का चुकुत कर घर चलना है। ऐसे नहीं त्रेता में आने वाले सतयुग में आवेंगे नहीं। वृध होने लिए ऊपर से आते रहते हैं। बेहद के बाप से बेहद स्वर्ग का वरसा मिलता है। स्वर्ग नई दुनिया नर्क पुरानी दुनिया को कहा जाता है। ड्रामा फिरता रहता है। बच्चे जानते हैं हमने अनेक बार चक्र लगाया है। लगाते ही रहेंगे। इसलिए मीठे2 बच्चों को पुरुषार्थ करबहुतों का कल्याण करना है। तुम बच्चे फील करते हो जो बाप को नहीं जानते उनको आरफन नास्तिक, निधणका कहा जाता है। यह बरोबर है। बाप के आयुपेयान को तुम्हारे सिवाय कोई नहीं जानते। कितना बड़ा स्कूल है। बाप डोरापा आकर देते हैं। तुम पूज्य थे फिर पुजारी बने। अपने को चमाट मार विषयसागर में गिर पड़े। इसको कहा जाता है भूल-भूलईया का खेल। मैज़ बनाते हैं ना। जहां से जाओ माथा टकड़ेगा दीवाल से। फिर झण्डे वाले को बुलाते हैं रास्ता बताओ।

तुम बच्चों को तो विकारों से तीन कोस दूर भागना चाहिए। पढ़ना है तो भी कन्याएं कन्याओं के साथ पढ़े। तो सेफ्टी है। जयपुर में कुमारियों का स्कूल है। बड़ा खबरदारी से रखते हैं। पहले तो यह प्रेक्टीस डालनी है हम आत्मा है। बाप की सन्तान हैं। बाबाहमको पढ़ाते हैं। आत्मा पढ़ती है। शरीर नहीं। हरेक बात आत्मा ही सीखती है। बाढ़ा आत्मा ही बनती है। आत्मा तमोप्रधान बनती है फिर सतोप्रधान भी आत्मा ही बनती है। आत्मा ने शरीर लिया है। आत्मा कहती है हम यहपुराना शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। उनको कहा जाता है आत्मा-अभिमानी बनना। यह बाप ही सिखलाते हैं। पक्का याद करो। नहीं तो तुम घड़ी2 भूल जाते हो। वहां भी याद करना चाहिए। पहले2 अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। आने से ही सावधान कर देनी चाहिए। अपने को आत्मा समझ बाप से सुनो। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को याद प्यार गुडनाईट। और नमस्ते।

रात्रि क्लास 7-7-68 :- यह नयनों से जो जल आता है याद में वह मोती बन जाती है। याद की यात्रा से बड़ी कमाई होतीहै। यह आंसू बहना याद में सिर्फ पुरुषोत्तम संगम युग पर ही होता है। अभी तो कुछ नहीं है आगे चल तुमको कोशिश बहुत होगी। तुम माया पर जीत पहनते जावेंगे। तो खुशी में भी आंसू आवेंगे। जब बाप द्वारा तुम्हारा सुख की सभी कामनाएं पूरी हो जाती है। ऐसे नहीं कि यह (ल0ना0) एक दो को प्यार नहीं करते होंगे। परन्तु विकार का ख्याल कब नहीं होगा। देह-अभिमान में यहां है। रावण राज्य में हैं तो बाप प्यार भी नहीं करने देते हैं। नहीं तो गिर पड़ेंगे। क्यों कि रावण राज्य है ना। वहां तो अशुध ख्यालात होती ही नहीं। इसलिए बच्चों को मेहनत करनी पड़ती है ऐसे बनने लिए। प्यार भी यहां छी छी है। जैसे आशुक-माशुक गाये हुये हैं। उनका शुद्ध प्यार था। खराब बात नहीं। इसलिए गाये जाते हैं। स्त्री-पुरुष का प्यार तो होता है। परन्तु वहां प्यार करने से गिरेंगे नहीं। यहां तो गिर पड़ते हैं। वह दुनिया ही निराली है। नाम ही है स्वर्ग। यह नर्क। वह रामराज्य यह रावण राज्य। अभी है पुरुषोत्तम संगम युग। तुम पदमा-पदमभाग्यशाली हो। जो बेहद के बाप के महावाक्य सुनते हो। बच्चों को मेहनत करनी पड़ती है। जोर दिया जाता है अपने को आत्मा समझो। देह के प्यार में न जाओ। वहां है पवित्र-प्रवृति मार्ग। कितना ऊंच पद। फिर अपवित्र-प्रवृति-मार्ग में देखो भारत का क्या हाल हुआ है। यह शाहुकारी भी अल्पकाल के लिए है। बाप कहते हैं यह मृत्युलोक का बाकी थोड़ा टाईम है। तुम आज से 5000 वर्ष पहले सतयुग में थे। पुनर्जन्म लेते2 नीचे उतरते आये हो। झाड़ वृध को पाता गया है। आत्माएं ऊपर से आती रहती है। यह झाड़ आदि का किसको पता नहीं है। ऋषि-मुनि कुछ नहीं जानते। रावण राज्य है। तुम्हारे विकर्म विनाश हो इसलिए बाप मेहनत कराते रहते हैं। अपने को आत्मा समझो तो विकर्म विनाश हो। अपना चार्ट रखो कितना समय बाप को याद करते हो। आठ घंटा धोरी-धंधा, आठ घंटा आराम, आठ घंटा तो याद करना चाहिए। वही पद पा सकते हैं। अभी सृष्टि का हो अंत है।

इसलिए शरीर भी खुशी से छोड़ना है। घर तो खुशी से जाना चाहिए ना। ऐसे नहीं जीवघात करने से वापस जा सकते हैं। कुआं गिर गया, शूट कर दिया वह कोई वापस जा नहीं सकते। दुःख होती है जो कर दूसरा जन्म ले बालकवनेंगे। अभी तुमको बाप बेहद का ज्ञान सुनाते हैं। सुख भी बेहद का, नालेज भी बेहद की। बच्चे जानते हैं बेहद का मालिक ही बेहद का नालेज देते हैं। तुम बेहद सृष्टि के मालिक बन जाते हो। खुद कहते हैं मैं राजा रानी नहीं बनता हूं ; तुमको राजाई देता हूं मैं नहीं बनता। यह खेल है ना। है बेहद का खेल। अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो। दैवीगुण धारण करो। पूछते हैं खान-पान ऐसा मिलता है। न खावें तो तो नौकरी आदि छूट जावे। फिर युक्ति बताते हैं शिव बाबा को याद करो। याद के बल से इस आयरनएजेड पहाड़ को गोल्डेनएज बनाते हो। वहां सोने की खानियां भरपूर रहती है। हर चीज़ सहज मिल जाती है। तुम्हारी लाईफ(जीवन) भी सहज पास होते हैं। बिमारी आदि कुछ नहीं। बाप जानते है भक्ति मार्ग में बहुत धक्के खाये हैं। मेहनत की है भगवान से मिलने लिए। भगवान को जानते ही नहीं तो मिले कैसे। बाप कहते हैं मुझे ही आना पड़ता है। ढूंढते हैं पता नहीं भगवान किस रूप में भी आ जावे। वास्तव में तुम यहां सुप्टी में बैठो हो। यहां बाप आदि करने की दरकार नहीं रहती। प्यार से सभी को समझाते हैं। एक बाप सभी को दुःख से छूड़ा कर शान्तिधाम सुखधाम ले जाते हैं। इसलिए उस एक को भक्ति मार्ग में सभी याद करते हैं। एक ही बेहद का बाप है। तो उन से बहुत दिल लगती है। वही इतना सुख देते हैं। ड्रामा अनुसार लान्सा हुआ है। कुछ कपा आशीर्वाद आदि नहीं करते। कहते हैं यह ड्रामा में नूंध है। मुझे पढ़ाना भी जरूर है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफे भी समझानी है। तुम अधूरा पढ़ते हो। ऊपर चढ़ने का पाठ तो पढ़ते ही नहीं हो। नीचे उतरने का पाठ पढ़ते हो। यह नालेज अभी ही मिलती है। फिर कभी नहीं मिलेगी। जरा भी याद न रहेगा। इनको यह पता नहीं हम हमने यह पद कैसे पाया। तुमको मालूम है। चक्र को भी तुम जानते हो। इसलिए तुम्हारा जन्म हीरे जैसा है। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। आगे चलकर जब सतोप्रधान तक आवेंगे तब बहुत खुशी होगा। तभी में तुम्हारा खुशी कम होता है। अभी बाप कहते हैं फिर याद करो। संशय की बात नहीं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सभी पाप कट जावेंगे। यह गीता का युग है। बाप कहते हैं मैं कल्प के संगमयुग पर ही आता हूं। संगम का वृतान्त भी अभी का है। राजयोग सिखलाने बाप ही कहते हैं मैं कल्प के संगम युग पर आता हूं। बाप की ग्लानी करते हो पत्थर-भितर में है तो गुप्त सजा भी मिल जाती है। जो पत्थर बुधि बन पड़ते हो। कुछ भी समझ नहीं है। कितनी ग्लानी करते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो इस ज्ञान के पहले हम बन्दर मिशल थे। बन्दर में विकार सब से जास्ती होते हैं। अभी बाप कहते हैं बच्चे दैवीगुण धारण करो। पहले तो इस रथ को ही दैवीगुण धारण करना पड़े। सीखना पड़े। बाप कहते हैं कभी किसको दुःख न दो। मन सा वाचा कर्मणा किसको सिखाना नहीं है। जानते हो यह दुनिया ही खत्म हो जानी है।। बच्चों को मेहनत करनी है बाप को याद करना है। 84 के चक्र को भी याद करना और देवी गुण भी धारण करनी है। दैवी कैरेक्टर्स चाहिए। था जरूर। सारी दुनिया में पीस-प्रास्पर्टी प्युरिटी थी। देवता तो फिर क्या। कहा जाता है यह जैसे देवता है। देवता माना ही उन में दैवीगुण होते हैं। अभी तुम मनुष्य से देवता बन रहे हो। ड्रामा अनुसार तुम पुरुषार्थ भी जरूर करेंगे। अच्छा बच्चों को गुडनाईट । रूहानी मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।